ISSN 2250-2467

दृष्टि

An International Research Referred
Journal Related to Higher Education

Volume 3, No. 1 2012

spirit of youth

छात्र परिषद्
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी (भारत)

Contents

Volume-3, No. 1		2012
Socio-Demographic Determinants of Unplanned Pregnancy in Bangladesh	*Tapan Kumar Roy, Brijesh P. Singh & K. K. Singh*	1-12
Environment Protection : A Review of the Constitutional Mechanisms	*Anoop Kumar*	13-22
Judicial attitude on witness protection in India	*Prakash Chandra Mishra*	23-35
Protect your Intellectual creativity	*Digvijay Singh*	36-38
Analysing Hindi Split-Ergativity as a morphological phenomenon	*Manish Kr. Singh*	39-49
SWOT Analysis of LIC of India	*Furquan Uddin & Dr. S.N. Jha*	50-59
Innovation of Fast Moving Consumer Goods (FMCG) Packaging : Trends and Developments	*Rohini Topey, Dr. H.L. Prajapati*	60-67
महामनसां राष्ट्रनिर्माणदृष्टिः	*अर्चना पाण्डेय*	68–75
शब्दस्वरूप विमर्श	*भूपेन्द्र कुमार ओझा*	76–82
गाँधी जी महात्मा क्यों ?	*अतुल कुमार दूबे*	83–93
महात्मागाँधी और एक सपना स्वराज का	*कुमारी सुनन्दा मण्डल*	94–100
ज्योतिषशास्त्र के ऐतिहासिक विकासक्रम का समालोचनात्मक अनुशीलन	*नवनीत शर्मा*	101–110
शमशेर साहित्य में स्वाधीनता के प्रश्न	*विवेकानन्द देव पाण्डेय*	111–114
झाँवा : एक मूल्यांकन	*सच्चिदानन्द देव पाण्डेय*	115–122
'किरातार्जुनीयमहाकाव्य' की भाषा–वैज्ञानिकता	*राम अचल यादव*	123–126
लोकगीत : एक परिचय	*सारिका पाण्डेय*	127–139
पुराणों में संगीत	*संदीप कुमार ओझा*	140–148
रागों का समय सिद्धांत	*कृतानन्द पाण्डेय*	149–153
महिला सशक्तिकरण : ग्रामीण महिलाओं में अर्थोपार्जन के साधन एवं चुनौतियां	*भावना यादव*	154–160

दृष्टि–2012 (अंक 3) भाग–1, 184–186

काशी की लोक कला में भित्तिचित्र परम्परा

अलका गिरि[1]

किसी देश की संस्कृति उसकी आध्यात्मिक, वैज्ञानिक तथा कलात्मक उपलब्धियों की प्रतीक होती है। किसी देश व प्रान्त की प्रगति तथा वहाँ के लोगो के विचार को वहाँ की लोक संस्कृति के माध्यम से जाना जा सकता है। लोक संस्कृति का रूप देश तथा काल की परिस्थितियों के अनुसार ढलता रहता है एवं इसका रचनाक्रम भूत, वर्तमान और भविष्य में निरन्तर संचरित होता रहता है। लोक संस्कृति के द्वारा देश तथा सामाज की यथोचित छवि प्रतिबिम्बित होती है इसी कारण इसे समाज का दर्पण कहा जाता है।

भारत एक विशाल देश है जिसकी लोक संस्कृति बहुत ही समृद्ध है। हर प्रान्त या राज्य की अपनी एक अलग–अलग लोक संस्कृति होती है इस लोक संस्कृति में अनेक लोक कलाओं यथा– गायन, वादन, नर्तन, शिल्प, चित्रकला, कास्ठ कला, मृण कला आदि का समावेश होता है। इसी विशाल भारत के पूर्व में लोक कला व संस्कृति से समृद्ध उत्तर प्रदेश स्थित है इस कला व संस्कृति के माध्यम से वहां के निवासियों का रहन–सहन, रूचि विचार आदि परिलक्षित होते है। उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध शहर काशी है जिसे शिव की नगरी तथा मोक्षदायिनी नगरी भी कहते है। इस शहर की महिमा, गुण एवं गरिमा का वर्णन वेद तथा पुराणों में पाया जाता हैं यही कारण है कि यहां की लोक कलाओं में आध्यात्मिकता की गहरी छवि दिखाई देती है एवं यहां के हर उत्सवों, संस्कारों में इन लोक कलाओं के दर्शन होते हैं। इसी लोक कला के अन्तर्गत भित्तिचित्र का विशेष महत्व है।

भित्तिचित्रों की परम्परा काशी में बहुत प्राचीन है एवं यह स्थानीय परिवेश को अपने में समेटे हुए है। यहाँ विभिन्न संस्कारों व उत्सवों में घर के अन्दर व बाहर, मन्दिरों के द्वारों तथा मठों मे कई प्रकार की आकृतियों से बने भित्तिचित्र प्राप्त होते हैं।

प्रारम्भ में यज्ञ वेदियों को बिन्दु रेखाओं, वृत्त, त्रिकोण एवं वर्ग आदि आकारों से विभिन्न डिजाइन बनाकर अनाज, हल्दी, कुनकुम, फूल एवं पत्तियों के द्वारा सजाया जाता था। इन आकृतियों के विशेष अर्थ होते है जैसे **बिन्दू** सृष्टि का केन्द्र बिन्दू, **त्रिकोण** मानव के तीन गुण (**सत्व, रज, तम**), तीन काल (**भूत, वर्तमान, भविष्य**) त्रिमुर्ति (**बह्मा, विष्णु, महेश**) का प्रतीक माना जाता है इसी

---

1. शोध छात्रा, नृत्य विभाग, सगींत एवं मंच कला संकाय, का0हि0वि0वि0, वाराणसी

प्रकार अन्य सभी आकृतियों में भी अर्थ निहित होते हैं। तत्पश्चात धीरे–धीरे देवी–देवताओं के आकृतियों को भी दीवारों पर अंकित किया जाने लगा। दैनिक जीवन में मुख्य रूप से प्रयोग में आने वाली वस्तुएं एवं अत्यधिक उपयोगी पशु पक्षियों की भी पूजा करने की प्रथा चल पड़ी तथा मानव खुशी व उल्लास के साथ भित्तियों को इन वस्तुओं तथा पशु पक्षियों के आकृतियों से भी अलंकृत करने लगा।

इस प्रकार वह परम्परा जो केवल सुन्दरता बढ़ाने की दृष्टिकोण से प्रारम्भ हुई थी वह धीरे–धीरे स्वतः हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गयी व अपने धार्मिक पृष्ठ भूमि के साथ महिलाओं के विभिन्न उत्सवों, त्यौहारों व संस्कारो में समाहित होने लगी। परिणाम स्वरूप ऐसी कलाधारा का विकास हुआ जिस पर महिलाओं का ही अधिकार हो गया और उन्हीं के द्वारा यह संवरती हुई पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती गयी।

अनेक शुभ अवसरों जैसे अहोई अष्टमी करवा चौथ, दीपावली, विवाह, नागपंचमी एवं भाईदूज आदि अवसरों पर घर की महिलाओं द्वारा भित्तियों पर उस त्योंहार से सम्बन्धित चित्र अंकित किये जाते थे। उदाहरण के लिए **करवा चौथ** पर स्त्रियों द्वारा करवा चौथ की कथा से सम्बन्धित चित्र भित्ति पर अंकित किये जाते थे, **दीपावली** के अवसर पर लक्ष्मी एवं गणेश की आकृति चित्रित कर पूजा की जाती थी। **विवाह** के अवसर पर घर के अन्दर पूर्व दिशा के दीवार पर **कोहबर** बनाया जाता है जिसमें पालकी में दुल्हा व दुल्हन को बैठे हुए दर्शाना, आशीर्वाद देते देवतागण आदि को चित्रित किया जाता है। इसके अतिरिक्त विवाह के अवसर पर ही घर के बाहर दरवाजों को भी सजाने की भी परम्परा होती है। दरवाजों पर अनेक शुभ प्रतीक जैसे–**द्वार के दोनों ओर मंगल कलश लिये हुए स्त्रियां, तलवार लिये रक्षक, केले के खम्भे, मीन युगल, घोड़े हाथी पर सवार लोग, शहनाई बजाते हुए लोग, विभिन्न पक्षी जैसे तोता, मोर**, आदि चित्रित किये जाते हैं साथ ही इसको और आकर्षक बनाने के लिये फूल एवं पत्तियों को भी बार्डर की तरह बनाया जाता है।

इन अवसरों पर बनाये जाने वाले भित्तिचित्रों के अतिरिक्त लोगो के दरवाजों पर जातिगत एवं व्यवसाय के अनुसार चित्र जैसे– दूध के व्यापारी **यादव** के आवास पर गाय, भैंस व कुश्ती करती जोड़ी का चित्रांकन, **धोबी** के घर पर कपड़े धोने का चित्रण व गधे का चित्रण, **ब्राह्मण** के आवास पर पूजा पाठ की आकृति एवं **क्षत्रिय** के अवास पर शिकारी का अंकन पाया जाता हैं।

इन आवासों पर पाये जाने वाले भित्तिचित्रों के अतिरिक्त काशी के विभिन्न मंदिरों जैसे–संकट मोचन मंदिर के बाह्य भित्ति एवं बरामदे की भित्ति पर देवियों तथा पशु पक्षियों के चित्र पाये जाते हैं, रामनगर किले में स्थित काली मंदिर में दुर्गा सप्तशती पर आधारित चित्र मिलते है जंगमबाड़ी मठ के द्वार पर

बेल बूटों, धार्मिक चित्रोंके साथ लोक कथाओं पर आधारित चित्र अंकित हैं। भोसला घाट के लक्ष्मी नारायण मंदिर के द्वार पर गन्धर्व, मृग, मयूर आदि के चित्र अंकित है।

इन मंदिरों में पाये जाने वाले चित्रों में परम्परागत गेरू, रामरज, नीम, प्यूड़ी, काले, सफेद व कुछ अन्य रंगों का प्रयोग किया गया है। जबकि आवासों एवं भवनों पर विभिन्न अवसरों पर बनाये जाने वाले चित्रों में गेरू, चावल का आटा, गोबर, हल्दी, हरी पत्तियां, सिन्दूर एवं रंगीन गुलाल आदि का प्रयोग किया जाता है। काले रंग के लिए चावल को जला कर दूध में घिसकर प्रयोग किया जाता है जबकि हरा रंग पत्तियों को कूट छान कर बनाया जाता है।

इस प्रकार हम संक्षेप में कह सकते हैं कि किसी भी देश व प्रान्त की लोक कला उसकी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं जो मानव को आनन्द प्रदान करती है और उसके अमूर्त भावो को सामाजिक, धार्मिक एवं ऋतु परिवर्तन सम्बन्धी त्यौहारों एवं उत्सवों पर प्रतीक रूप में चित्रित करके देश, समुदाय, जाति व परिवार के कल्याण की कामना करती है।

वर्तमान में यह भित्तिचित्र परम्परा लुप्त होते जा रही है क्योंकि आधुनिकता का प्रभाव आ गया है लोग अपने घरो में चित्रों का अंकन पहले जैसे कराते थे वैसे न कराके वर्तमान में उसके स्थान पर विभिन्न प्रकार के पेण्ट, चूना तथा रंगीन चित्रित कागज आदि से करवाने लगे। इस कला के प्रति लोगो में उतनी रूचि अब नही रह गयी। साथ ही इसके कलाकारों को भी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पढ़ रहा है। जिससे वे स्वयं इस कला को छोड़कर अन्य व्यवसाय से जुड़ने लगे है। परन्तु यह कला भारत की संस्कृति है और इसे बचाने के लिए और इस कला को और समृद्ध बनाने की आवश्यकता है इसके लिए आवश्यक है कि इस कला और इसके कलाकारो को प्रोत्साहित व सम्मानित किया जाये। इसके साथ ही अपने जीवन में इनके महत्व को समझना होगा और आगे की पीढ़ी को भी समझाना होगा। जिससे वे इस परम्परा को समृद्ध करने में अपना योगदान दे सके और काशी की सास्कृतिक कला व इसके पहचान को चिर काल तक जीवित रखा जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाराणसी की भित्तिचित्र कला में दुर्गा (डा0 प्रेम शंकर द्विवेदी)
2. वाराणसी की चित्रकला सन्मार्ग वारणसी विशेषांक (डा0 एच0 एन0 मिश्रा)
3. काशी की लोक कला (डा0 कमल गिरि)
4. भारतीय चित्र कला का इतिहास (डा0 अविनाश बहादुर वर्मा)
5. उत्तर प्रदेश की लोक कला–भूमि व भित्तिअलंकरण (डा0 विमला वर्मा)
6. काशी का इतिहास (डा0 मोती चन्द)

●